प्राश्निक कोड क्र० 12/2642
मुख्य परीक्षा

आदर्श उत्तर

परीक्षा का नाम- उत्तर मध्यमा, द्वितीय 2025
विषय राजनीति विज्ञान - विषय कोड 1214 माध्यम हिन्दी
कुल प्रश्न 24
समय - 3 घण्टा पूर्णाङ्क 100

उत्तर 1 सही विकल्प चुनिए - (1×7=7)
(1) दूसरी दुनिया के देश
(2) 27 देश
(3) 2007
(4) IMF
(5) वैश्विक ताप वृद्धि
(6) 1998
(7) विश्व बन्धुत्व

उत्तर 2 सही जोड़ी बनाइये - (1×7=7)

(1) शाक थेरेपी अपनाई गई	(1) 1990
(2) पर्यावरण से जुड़ा अन्तर्राष्ट्रीय संगठन	(2) संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण विकास
(3) वैश्वीकरण के समक्ष चुनौतियां	(3) प्रतियोगिता बनाए रखना
(4) क्योटो प्रोटोकाल	(4) 1997
(5) सी.टी.बी.टी की स्थापना	(5) न्यूयार्क
(6) भारत और चीन का	(6) सीमा विवाद
(7) सिन्धु जल समझौता	(7) भारत और पाक

उत्तर-3 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए - (1×7=7)
(1) भारत
(2) सुरक्षा परिषद
(3) सुरक्षा
(4) 1991
(5) क्षेत्रीय
(6) सुकुमार सेन
(7) जुलाई 1972

उत्तर 4- सत्य / असत्य (1×6=6)

1 असत्य
2 सत्य
3 असत्य
4 असत्य
5 सत्य
6 सत्य

उत्तर 5 एक शब्द में उत्तर दीजिए- (1×6=6)

(1) सियाचीन की समस्या भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेद का कारण है।
(2) यूनीसेफ का पूरा नाम यूनाइटेड नेशन चिल्ड्रन फंड है।
(3) विश्व की जनसंख्या लगभग 7 अरब है।
(4) भारत में नर्मदा बचाओ व टिहरी बचाओ आन्दोलन चलाए गये।
(5) भारत में भाषा के आधार पर आन्ध्रप्रदेश राज्य का गठन किया गया।
(6) E.V.M का पूरा नाम इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन है।

उत्तर 6 पूंजीवाद देशों को छोड़कर अन्य देशों जो समाजवाद के पक्षधर थे वे दूसरी दुनिया कहलाते हैं इनका नेतृत्व सोवियत संघ करता था। (2)

अथवा

स्वतंत्रता की घोषणा करने वाला प्रथम लिथुआनिया सोवियत संघ गणराज्य था। जिसने 11 मार्च 1990 को स्वयं को स्वतंत्र घोषित किया।

उत्तर 7 यह विजन टकराव के स्थान पर सद्भाव पर जोर देने को प्रधानता देता है तथा साथ ही टकराव से समाधान करने का दृष्टिकोण है। यह सुरक्षा तथा व्यापारिक मामलो को विशेष महत्व का पक्षधर है। (2)

अथवा

यूरोप में शान्ति एवं सुलह लोकतन्त्र तथा मानवाधिकारों की प्रगति में अपने योगदान हेतु नोबेल शान्ति पुरुस्कार से सम्मानित किया गया।

उत्तर 8 (1) भारत के आलोचक देश उसके परमाणु हथियारों को लेकर चिंतित है तथा (2)
(2) कुछ आलोचक देशों की मान्यता है कि पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों में कठिनाई की वजह से भारत स्थायी सदस्य के रूप में अप्रभावी रहेगा।

अथवा

नुकसान से बचाव करने की क्रिया तथा व्यवस्था को 'सुरक्षा' कहा जाता है। यह व्यक्ति, स्थान, वस्तु, निर्माण, देश, संगठन ऐसी किसी भी अन्य वस्तु जिसे हानि पहुँचाई जा सकती है।

(2)
उत्तर 9 पृथ्वी के वायुमण्डल में ग्रीन हाऊस गैसों में बढ़ोत्तरी की वजह से औसत तापमान में होने वाली को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।

अथवा

जन साधारण का वह भाग जो किसी वन प्रदेश अथवा अन्य भू-भाग में आदिकाल से रहता चला आ रहा है वह सम्बन्धित क्षेत्र का मूलवासी कहलाता है।

उत्तर 10 वैश्वीकरण में दूसरे एवं तीसरे स्थान पर क्रमशः जापान एवं फिनलैण्ड हैं। (2)

अथवा

वैश्वीकरण को प्रभावित करने वाली परिस्थितियाँ
(1) प्रौद्योगिकी में हुए विकास तथा (2) जनसाधारण की सोच में विश्व व्यापी पारस्परिक जुड़ाव का बढ़ना।

उत्तर 11 1 शरणार्थियों द्वारा छोड़ी गई सम्पत्तियों की क्षतिपूर्ति (2) नेहरू लियाकत समझौता (3) अल्प संख्यकों पर होने वाले हमले आदि हैं। (3)

अथवा

(1) स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान कांग्रेसियों का लोगों में अधिक लोकप्रिय होना (2) यह एक मात्र ऐसा दल था जिसके पास ग्रामीण स्तर तक विस्तृत फैला हुआ संगठन था।
(3) विपक्षी दल का कमजोर होना था।

PAGE NO.: (4)

उत्तर 12 नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे किसी क्षेत्र विशेष अथवा निश्चित समयावधि में हासिल किये जाने वाले साध्यों (लक्ष्यों) का निर्धारण किया जाता है। भविष्य के कार्यक्रम वर्तमान में निर्धारण नियोजन कहलाता है ॥ (अथवा) (3)
नियोजन के प्रमुख तीन उद्देश्य -।
(1) उद्योगों के विकास की योजना-बनाना।
(2) निर्धनता और बेरोजगारी का उन्मूलन करना।
(3) कृषि उत्पादन में वृद्धि करना।

उत्तर 13 विश्व बन्धुत्व से तात्पर्य- जो कि विश्व के सभी देशो के साथ बन्धुत्व भाईचारे की भावना लेकर चलता है उस भाईचारे की भावना के अनुसार ही सभी देशो के विकास की बात करता है तो उस व्यवहार को विश्व बन्धुत्व कहा जाता है। (3)
(अथवा)
प्रत्येक देश की सरकार अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अन्य राष्ट्रो से सम्बन्ध स्थापित करने व अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिए कुछ निश्चित उद्देश्यों के आधार पर जो नीति निर्धारित करता है, वह उस देश की विदेश नीति कहलाती है।

उत्तर 14 1960 के दशक को खतरनाक दशक कहा जाता है, क्योकि गरीबी गैर बराबरी साम्प्रदायिक और क्षेत्रीय विभाजन आदि के सवाल अभी अनसुलझे थे। इसदशकमें भारतचीन-पाकिस्तान से युद्ध हुए दो प्रधानमंत्रियोंकी मृत्यु हुई थी। (अथवा) (3)
नारी को समान अधिकार प्रदान करना तथा उसके अधिकारों की रक्षा करना नारी स्वतंत्रता कहलाता है। उसे आर्थिक सामाजिक व राजनैतिक स्वतंत्रता देना नारी स्वतंत्रता है जैसे शिक्षा, विवाह, कैरियर में चुनने की आजादी देना आदि-

उत्तर 15 ई.वी. रामास्वामी नायकर, 20वीं में भारत के प्रमुख सामाजिक सुधारक थे, जिन्होंने उत्तर भारत की राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक प्रभुत्व हिन्दी भाषा का विरोध तथा द्रविड़ो का गौरव बढ़ाने पर जोर दिया। दूसरे राज्यों में समर्थन न मिलने पर वह तमिलनाडु तक सिमट कर रह गया। (4)

अथवा

भारत में क्षेत्रवाद के उदय के कारण निम्नलिखित है,

1 ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि – राज्यों के पुनर्गठन के बाद अनेक पुरानी रियासतों का विभिन्न राज्यों में विलय कर दिया गया। इन रियासतों के लोग अब यह महसूस करते है कि यदि उनकी रियासत को अलग राज्य बनाया जाता तो वे अधिक फायदे में रहते।

2 विभिन्न संस्कृतियाँ – हमारा देश अनेक संस्कृतियों से परिपूर्ण है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र के निवासियों को अपनी-अपनी भाषा एवं संस्कृति पर गर्व है। अतः वे अपने लिए विशेष स्थितियों की मांग करते हैं।

3 आर्थिक परिस्थितियाँ – कुछ भारतीय क्षेत्रों का तेजी से आर्थिक विकास हुआ है, जबकि देश के कुछ हिस्से इस दृष्टिकोण से पिछड़ गए हैं। इन पिछड़े हुए क्षेत्रों में जन साधारण में असन्तोष के भाव उत्पन्न हुए हैं जिनकी वजह से क्षेत्रवाद का उदय हुआ है।

4 जातीयता की भावना – क्षेत्रवाद को उदित करने में जातियों की भी भूमिका है। भारत के जिस हिस्से में किसी एक जाति विशेष की प्रधानता रही है वहीं क्षेत्रवाद की प्रवृति काफी उग्र रूप में परिलक्षित हुई है।

5 राजनैतिक परिस्थितियाँ – राजनेता अपनी राजनीतिक महत्वकांक्षाओं को पूर्ण करने हेतु प्रादेशिकता की आग तेज करने हर सम्भव उपाय करते हैं, उनका यह कृत्य क्षेत्रवाद को उदित करने में सहायक सिद्ध होता है।

(5)

उत्तर 16 मण्डल आयोग का गठन सन् 1979 में तत्कालीन जनता पार्टी की सरकार द्वारा किया गया था। इस आयोग का कार्य क्षेत्र सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ों की पहचान करना था। मण्डल आयोग के प्रथम अध्यक्ष श्री बिन्देश्वरी प्रसाद मण्डल थे। मंडल आयोग को पिछड़े वर्गों का आयोग भी कहते हैं। अथवा

पूर्वोत्तर राज्यों की चार प्रमुख क्षेत्रीय आकांक्षाएं निम्न प्रकार स्पष्ट की जा सकती है–

1 प्रारम्भ में गैर असमी लोगों ने राज्य सरकार द्वारा उन पर असमी भाषा लादे जाने का पुरजोर विरोध करते हुए इस क्षेत्र में राजनीतिक स्वायत्ता की मांग की थी। हालांकि भारत सरकार ने समय-समय पर असम का विभाजन करके मेघालय, मिजोरम तथा अरुणाचल प्रदेश का गठन किया लेकिन इसके बाद भी वहां स्वायत्ता की मांग का अन्त नहीं हो पाया।

(2) पूर्वोत्तर के मिजोरम तथा नागालैण्ड में अलगावादी मांगो का प्रभाव लम्बी समयावधि तक रहा। मिजो लोगों की मान्यता थी कि वे कभी ब्रिटिश इण्डिया के भाग नहीं रहे, अतः भारतीय संघ से उनका कोई लेना देना नहीं है। अपने क्रोध के कारण उन्होंने लालडेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रंट बनाकर स्वतन्त्रता की मांग को आगे बढ़ाते हुए सशस्त्र अभियान चलाया। अलगाववाद से छुटकारा पाने के लिए भारत सरकार मिजोरम को पूर्ण राज्य की श्रेणी कराई।

(3) भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में बाहरी व्यक्तियों के प्रवास की विकट समस्या है। स्थानीय निवासी इनको स्वयं से अलग मानते हुए इनका प्रबल विरोध करते हैं। दिन-प्रतिदिन पूर्वोत्तर राज्यों की राजनीति में प्रवासियों की समस्या विकराल बनती चली जा रही है।

(4) सर्वविदित है कि असम में प्रचुर मात्रा में चाय के बाग, तेल और कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन मौजूद हैं। स्थानीय लोगों का स्पष्ट कहना है कि इन संसाधनों को बाहर भेजा जा रहा है, जिससे असम के लोगों को अपार क्षति पहुँच रही है।

उत्तर 17 सोवियत प्रणाली की प्रमुख खामियाँ निम्नलिखित हैं- (4)

(1) सोवियत प्रणाली में नागरिकों का वास्तविक प्रतिनिधित्व नहीं होता था और शासन पर साम्यवादी दल के नेताओं तथा नौकरशाही का नियंत्रण था।

(2) नागरिकों को शासन की कमियों को उजागर करने की स्वतन्त्रता नहीं थी। आम नागरिक, शासन और साम्यवादी दल की आलोचना नहीं कर सकते थे।

(3) नागरिकों का जीवन कठिन था, जबकि दल के नेता और सरकारी कर्मचारी अच्छे जीवन यापन करते थे।

अथवा

सोवियत प्रणाली के विघटन निम्नलिखित हैं।

1 सोवियत संघ द्वारा 1979 में अफगानिस्तान में हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप देश की अर्थ व्यवस्था अत्यन्त दयनीय स्थिति में पहुँच गयी थी।

(2) सोवियत प्रणाली में प्रतिवर्ष खाद्यान्न आयात लगातार बढ़ता ही चला गया 1970 दशक के अंतिम वर्षों में यह व्यवस्था लड़खड़ा गई।

(3) हालांकि सोवियत संघ के नागरिकों के पारिश्रमिक की दरें लगातार बढ़ी लेकिन उत्पादकता और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वह पाश्चात्य देशों से प्रतिस्पर्धा में काफी पीछे रह गया।

(4) आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से कमजोर हो चुके सोवियत संघ के लोग तत्कालीन मिखाइल गोर्बाचेव के सुधारों की धीमी गति से असन्तुष्ट थे।

PAGE NO.:

7

उत्तर 18 (1) फरक्का बाँध विवाद — एक अंग्रेज इन्जीनियर ने भारत सरकार को सुझाव दिया कि यदि कलकत्ता बन्दरगाह को नष्ट होने से बचाना है तो मुर्शिदाबाद नामक स्थान पर एक बाँध बनाया जाये। 1951 में इस बाँध के निर्माण की घोषणा की गयी और बाद में बाँध निर्माण कर दिया गया। बंगला देश जब अस्तित्व में आया तो उसने इस पर आपत्ति की और कहा कि इस बाँध के कारण बाङ्लादेश की नदियों में पानी की कमी हो जायेगी। सन् 1976 में मौलाना भाषानी ने घोषणा की कि वह अपने समर्थकों के साथ भारतीय सीमा में प्रवेश कर बाँध को तोड़ देंगे। भारत सरकार ने इसका कड़ा विरोध किया। बांगला देश की सरकार के प्रतिबन्ध के कारण भाषानी का यह अभियान स्थगित हो गया, परन्तु दोनों देशों के सम्बन्धो में कड़वाहट आ गयी।

(2) बांगलादेश में अल्प संख्यको पर अत्याचार — बंगला देश के हिन्दू अल्पसंख्यको पर अत्याचार किये जा रहे थे। इस कारण काफी संख्या में हिन्दू बांगला देश छोड़कर भारत आये। श्री जयप्रकाश नारायण ने बांगलादेश सरकार से अपील की कि वह बांगलादेश में हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों को रोके। बांगलादेश के राष्ट्रपति ने आश्वासन दिया फिर भी अत्याचार बन्द नहीं हुआ। परिणामत: दोनों देशों में तनाव बना रहा।

(3) न्यूमूर विवाद — सन् 1974 में बंगाल की खाड़ी में नये प्रकट द्वीप भारत के निकट होने के कारण भारत ने इस द्वीप पर अपना अधिकार जता दिया। बांगलादेश भी इस पर अपना दावा जताने लगा और उसके सैनिक जहाज द्वीप के आसपास गश्त करने लगे, तो भारत ने अपने सुरक्षा गश्तीदलों को द्वीप में उतार कर उसे नियंत्रण में ले लिया।

अथवा

शार्क के उद्देश्य —

(1) दक्षिण एशिया क्षेत्र की जनता के कल्याण एवं उनके जीवनस्तर में सुधार करना।
(2) दक्षिण एशिया के देशों की सामूहिक आत्म निर्भरता में बढ़ोत्तरी करना।
(3) क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास में तेजी लाना।
(4) परस्पर आपसी विश्वास समझबूझ तथा एक दूसरे की समस्याओं का मूल्यांकन करना।
(5) अन्य विकासशील देशों के साथ सहयोग में बढ़ोत्तरी करना।
(6) सामान्य हित के मामलों पर अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर आपसी सहयोग को सुदृढ़ता प्रदान करना।

उत्तर 19 (1) मानव जाति की सन्तति को युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा को स्थायी रूप प्रदान करना। (4)

(2) समान अधिकार तथा आत्म निर्णय के सिद्धान्तों को मान्यता देते हुए इन सिद्धान्तो के आधार पर विभिन्न राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धो एवं सहयोग में वृद्धि करने के लिए उचित उपाय करना।

(3) विश्व की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदि मानवीय समस्याओं के समाधान हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना।

(4) शान्ति पूर्ण उपायों से अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को सुलझाना।
(5) इन सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति में लगे हुए विभिन्न राष्ट्रों के कार्यों में समन्वयकारी केन्द्र रूप में कार्य करना। ही संयुक्त राष्ट्र संघ के लक्ष्य है।

अथवा

भारतीय परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए अपारम्परिक सुरक्षा को वरीयता दी जानी चाहिए
(1) वर्तमान परिस्थितियों में भारत को सैन्य हमले का लगभग किसी भी तरह का डर नहीं है।
(2) भारत के पड़ोसी देशों के पास परमाणु हथियार है।
(3) भारत आतंकवादियों की गतिविधियों से ग्रसित है।
(4) कुछ भारतीय राज्यों (प्रदेशों) में असामाजिक तत्वों द्वारा लोगों के मानवाधिकारों का हनन किया जा रहा है।
(5) सुरक्षा नीति का पहला घटक सैन्य क्षमता को मजबूत करना है क्योंकि भारत पर पड़ोसी देशों के हमले होते रहे हैं।
(6) भारत की सुरक्षा- सुरक्षा नीति का दूसरा घटक अपनी सुरक्षा हितों को बचाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय नियमों और संस्थाओं को सुदृढ़ करना।
(7) देश की अन्दरूनी सुरक्षा समस्याओं से निपटने की तैयारी।
(8) भारत में अर्थ व्यवस्था को इस तरह विकसित करके के प्रयास करना जिससे कि बहुसंख्यक नागरिकों को गरीबी और अभाव से निजात मिले।

(5)

उत्तर20 मानवजाति को जन संख्या विस्फोट, परमाणु युद्ध तथा स्वास्थ्य प्रकोप, वैश्विक तापमान में होने वाली वृद्धि से सर्वाधिक खतरा है। साथ ही साथ वैश्विक महामारी, भुखमरी, बेरोजगारी अलग खतरे हैं। सुरक्षा की गैर परम्परागत धारणा में एक देश को केवल दूसरे देश के सैन्य खतरे की ही चिन्ता नहीं रहती बल्कि अन्य स्रोतों से होने वाले खतरों की भी चिन्ता रहती है। देश के नागरिकों को विदेशी सेना के साथ-2 देश की सरकारों के हाथों से भी बचाना है। एक राष्ट्र प्राकृतिक आपदाओं, आतंकवाद, महामारियों को समाप्त करके लोगों को सुरक्षा प्रदान कर सकता है।

अथवा

1975 की आन्तरिक आपातकालीन घोषणा के सन्दर्भ में भारतीय संविधान में निम्न संशोधन हुए —
1 श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय को दृष्टिगत रखते हुए इस आशय का संवैधानिक संशोधन कराया कि ——

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के निर्वाचन को न्यायपालिका में चुनौती नहीं दी जा सकती है।

(2) आपातकाल के दौरान ही 42वाँ संवैधानिक संशोधन पारित हुआ जिसके द्वारा देश की विधायिका के कार्यकाल को 5 वर्ष से बढ़ाकर 6 वर्ष किया गया। आगे चलकर इस व्यवस्था को स्थायी रूप से लागू किया जाना था।

(3) संवैधानिक संशोधन द्वारा यह प्रावधान भी किया गया कि आपातकाल के दौरान चुनाव को एक वर्ष की समयावधि के लिए स्थगित किया जा सकता था। इस प्रकार 1977 के पश्चात 1978 में चुनाव कराये जाने थे।

(4) राज्य के नीति निदेशक तत्वों को मूलाधिकारों से अधिक कानूनी बल देने के लिए भी संवैधानिक संशोधन किया गया। संशोधन द्वारा नागरिकों के मूल कर्तव्य जोड़े गए और व्यक्ति अथवा समूहों के राष्ट्र विरोधी कार्यों हेतु संविधान में दण्ड के नवीन उपबन्ध प्रविष्ट किये गए।

(5)

उत्तर 21 क्षेत्रीय असन्तुलन :- धन एवं आय सम्बन्धी वितरण तथा विकास के क्षेत्र में एक ही राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य विकास सम्बन्धी भारी अन्तर की स्थिति को क्षेत्रीय असन्तुलन कहा जाता है।

क्षेत्रीय असन्तुलन के कारण -

1 विकास योजनाओं की आंशिक असफलता - भारत में क्षेत्रीय असन्तुलन को पनपने का अवसर विकास योजनाओं की आंशिक सफलता ने दिया। हालांकि योजनाओं का लक्ष्य उत्पादन एवं रोजगार में अभिवृद्धि था। लेकिन यथार्थ में ऐसा न हो पाया।

2. विपरीत राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिस्थितियाँ - भारत में क्षेत्रीय असन्तुलन का एक कारण राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिस्थितियाँ भी है। दल बदल एवं शासकीय उथल-पुथल ने विकास कार्यों को प्रभावित किया।

अथवा

1969 में कांग्रेस का विभाजन हुआ। नेहरू जी के निधन के पश्चात कांग्रेस में औपचारिक सिंडीकेट समूह हावी था जिसमें मुख्यतया के कामराज, एस के पाटिल, नीलम संजीव रेड्डी, अतुल्य घोष, मोरारजी देसाई तथा निजलिंगप्पा जैसे वरिष्ठ नेता सम्मिलित थे। यह सिंडीकेट प्रधानमंत्री पद पर कमजोर व्यक्ति की नियुक्ति चाहता था, जिससे

दल के शीर्ष स्तर पर उसका दबदबा कायम रहे। सिंडीकेट ने अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु राज्य सभा सदस्य श्रीमती गाँधी को प्रधानमंत्री बनवाया लेकिन वे शीघ्र ही उनके नापाक इरादों से परिचित हो गयी। 1969 के राष्ट्रपति चुनावों में कांग्रेसी प्रत्याशी नीलम संजीव रेड्डी की हार से सिंडिकेट नेताओं को बड़ा झटका लगा। अतः उन्होंने रेड्डी की पराजय हेतु श्रीमती गाँधी, जगजीवन राम तथा फखरुद्दीन अली अहमद को उत्तरदायी ठहराते हुए इनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रारम्भ की।

12 नवम्बर 1969 को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को कांग्रेस पार्टी से अनुशासन हीनता का दोषी मानते हुए निष्कासित कर दिया। चूँकि कांग्रेस संसदीय दल में श्रीमती गाँधी का बहुमत था अतः संसदीय दल के अधिकांश नेताओं ने इस कृत्य को अवैध ठहराया। इस घटनाक्रम से कांग्रेस दो भागों में विभक्त हो गयी।

(८)

उत्तर22 भारत विभाजन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं (5)

1 ब्रिटिश शासकों की नीति :→ भारत विभाजन हेतु ब्रिटिश शासकों की फूट डालो और शासन करो की नीति उत्तरदायी थी। इसी नीति का अनुसरण करके उन्होंने भारत के हिन्दुओं तथा मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का जहर बो दिया था। ब्रिटिश शासकों की सहानुभूति भी पाकिस्तान के साथ थी।

(2) मुस्लिम भावनाएँ – हिन्दू तथा मुसलमान के लम्बे समय तक मिल-जुलकर साथ रहने के बावजूद भी भाईचारे की भावना विकसित नहीं हुई। मुसलमान अपने आपको हिन्दुओं से अलग मानते चले आ रहे थे। उनकी इस भावना को मो. इकबाल, जिन्ना, तथा मुस्लिम लीग ने प्रोत्साहित किया। जिसका प्रभाव देश का बंटवारा रहा।

(3) ब्रिटिश सरकार ने 1870 से मुसलमानों को संरक्षण देना प्रारम्भ किया और इसी श्रृंखला में भारत शासन अधिनियम 1909 द्वारा साम्प्रदायिक निर्वाचन की आधारशिला रखी। अंग्रेजी हुकूमत ने द्वि-राष्ट्र सिद्धान्त का समर्थन करके मुस्लिम लीग को प्रत्येक सम्भव सहयोग दिया, जिसके फलस्वरूप भारत का विभाजन हुआ।

PAGE NO.: (11)

अथवा

वैश्वीकरण प्रतिरोध के कारण →

1 वैश्विक पूँजीवाद की विशेष अवस्था वैश्वीकरण से धनिक और धनवान तथा गरीब और अधिक निर्धन होता चला जा रहा है, अतः वैश्वीकरण का प्रतिरोध किया जा रहा है।

2 वैश्वीकरण में राज्य की शक्ति कम होती है तथा उसके कमजोर होने से गरीबों के हितों की रक्षा करने की उसकी क्षमता में कमी आती है। इसी प्रकार राजनीतिक दृष्टिकोण से भी वैश्वीकरण राज्य को कमजोर कर रहा है, अतः उसका प्रतिरोध होने लगा।

3 वैश्वीकरण से परम्परागत संस्कृति को नुकसान पहुँचा तथा लोग अपनी शताब्दियों पुराने जीवन-मूल्य एवं तौर तरीकों से दूर जाने लगे अतः वैश्वीकरण के प्रतिरोध के स्वर मुखर होने लगे।

4 विकासशील देशों में वैश्वीकरण के चलते बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की एकाधिकारवादी प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है।

5 वैश्वीकरण स्वाभाविक रूप से स्वीकृत प्रक्रिया न होकर प्रभुता सम्पन्न राज्यों द्वारा कमजोर राष्ट्रों पर जबरन लादी जा रही है क्योंकि विकसित देशों को अपने लिए बाजारों की जरूरत है।

6 वैश्वीकरण प्रक्रिया का लाभ अधिकांश लोगों तक नहीं पहुँचा। इससे आर्थिक असमानता को प्रोत्साहन मिला और तृतीय विश्व के देशों में निर्धनता का ग्राफ बढ़ा।

(5)

उत्तर-23 (1) सोवियत अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध तथा राज्य के नियंत्रण में थी, जबकि पूँजीवादी देशों में विशेष रूप से अमेरिका में मुक्त व्यापार नीति को अपनाया गया।

(2) सोवियत अर्थव्यवस्था पूँजीवादी देशों की अर्थव्यवस्था से अलग है, क्योंकि इसमें उद्योगों को ज्यादा महत्व प्रदान किया गया।

(3) सामूहिक फार्म को निजी फार्म में बदलना।

(4) पश्चिमी देशों की आर्थिक व्यवस्था से अलगाव।

(5) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को अपनाने के लिए वित्तीय खुलापन मुद्राओं की आपसी परिवर्तनीयता और मुक्त व्यापार नीति महत्वपूर्ण मानी गई

अथवा

भारत के गुट निरपेक्षता की नीति को अपनाने के प्रमुख कारण निम्न लिखित है:—

(1) विश्व शान्ति की भावना !— भारत स्वतंत्र हुआ उस समय विश्व दो शक्ति गुटो मे बंटा हुआ था| उन दोनो मे शीत युद्ध चल रहा था। ऐसी परिस्थिति में भारत ने विश्व को तनाव रहित बनाने के उद्देश्य से विश्व-शान्ति को आवश्यक समझा।

(2) आर्थिक पुनर्निर्माण — वर्षो की गुलामी के कारण भारत अत्यन्त पिछड़ा हुआ देश था| अतः भारत को अपने आर्थिक पुनर्निर्माण कार्यक्रम के लिए विश्व के समुन्नत देशो से आर्थिक व तकनीकी सहायता की आवश्यकता थी।

(3) स्वतंत्र एंव निष्पक्ष नीति की भावना — भारत किसी भी शक्ति गुट में शामिल होकर अपनी स्वतन्त्रता और निष्पक्षता को बंधक बनाना नही चाहता था| अतः उसने गुट-निरपेक्षता की नीति को अपनाया।

(4) सैद्धान्तिक मतभेद — भारत का मानना था कि विश्व के दोनों मे से एक गुट उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, आर्थिक शोषण एंव रंग-भेद की नीति का समर्थक था तो दूसरा गुट साम्यवादी होने के कारण लोकतंत्र का विरोधी थी| अपनी आवाज को विश्व जनमत तक पहुंचाने के लिए गुट-निरपेक्षता की नीति को अपनाया।

(5) एशिया एंव अफ्रीकी देशो का मार्गदर्शन करने की भावना— एशिया एंव अफ्रीका के देशों को भारत से अपेक्षा थी कि वह उपनिवेशवाद एंव साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में उनका साथ दे, अतः भारत ने उनकी अपेक्षाओ को पूर्ण करने की दृष्टि से मुक्ति आन्दोलनो का समर्थन किया किया गुट-निरपेक्षता की नीति को अपनाया।

उत्तर 24 भारतीय पर्यावरण आन्दोलन को निम्नलिखित बिन्दुओ द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है| (5)

(1) देश में वन्य प्राणियो की सुरक्षा हेतु विभिन्न अभ्यारण्यो (सेन्चुरी) की स्थापना करके दुर्लभ प्रजातियों के जीवों की सुरक्षा की गई है। इससे वनो की संख्या बढ़कर पर्यावरणीय वातावरण शुद्ध हुआ है|

(2) शासन ने वृक्षो की कटाई पर रोक लगाकर सभी सार्वजनिक स्थानो

पर वृक्षारोपण कराया है। उत्तराखण्ड में वृक्षों की कटाई रोकने हेतु विश्व प्रसिद्ध चिपको आन्दोलन सुन्दरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में चलाया गया।

(3) सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन के लिए अनेक बाँधों का निर्माण कराया।

(4) भारतीय कृषि क्षेत्र में हरित क्रान्ति द्वारा खाद्यान्न के क्षेत्र में देश ने आत्म निर्भरता प्राप्त कर ली है।

(5) भारत के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र का 20.4 प्रतिशत भाग वन क्षेत्र से घिरा है। इस क्षेत्र में और वृद्धि करके पर्यावरण आन्दोलन को चरम पर पहुँचाया जा सकता है।

(6) वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व 'ग्लोबल वार्मिंग' से चिन्तित है। भारत ने इस समस्या के समाधान हेतु वन क्षेत्र बढ़ाकर पर्यावरण सन्तुलन हेतु प्रत्येक प्रयास किया है। शासन ने नारा दिया है- "बच्चे दो और पेड़ हजार" पेड़ धरा के भूषण हैं, करते दूर प्रदूषण हैं"

अथवा

निःशस्त्रीकरण की असफलता के प्रमुख रूप से निम्नलिखित कारण हैं-

(1) निःशस्त्रीकरण एक पक्षीय होने की वजह से अधिकांश देशों की इस ओर से रुचि कम होती जा रही है।

(2) हथियारों का निर्माण करने के कम्पनियों के निजी स्वार्थ भी निःशस्त्रीकरण के रास्ते में बड़ी रुकावट पैदा कर रहे हैं।

(3) विभिन्न राष्ट्रों का निःशस्त्रीकरण के प्रति वैचारिक मतभेद भी निःशस्त्रीकरण की असफलता की मुख्य वजह कही जा सकती है।

(4) निःशस्त्रीकरण की असफलता का एक कारण दुनिया के विभिन्न देशों में शान्ति के प्रति रुचि का अभाव भी है।

(5) विश्वास का अभाव और सुरक्षा- विश्व के देश अपनी सुरक्षा के लिए संप्रभुता से बहुत प्रेम करते थे वे सोचते थे कि अपनी सुरक्षा के लिए स्वतंत्र है।

(6) हथियार उद्योग और आर्थिक स्वार्थ- हथियारों का उत्पादन परीक्षण और व्यापार एक बड़ा उद्योग बन गया।

(7) तकनीकि विकास- सैन्य व तकनीकी विकास में तेजी लाना।

(8) प्रभावी निगरानी संस्था का अभाव नहीं था जो हथियारों

को जबरदस्ती कम करा सके। निरस्त्रीकरण की
विफलता। दिरमार्ट वर्साय की सन्धि में एक प्रमुख लक्ष्य
था क्योंकि इससे दूसरा युद्ध रोकने के लिए प्रभावी
कदम के रूप में देखा गया था। शस्त्र नियंत्रण की दशा
में विभिन्न राष्ट्र प्रेरित होकर अपने शस्त्र भंडारों में जो
कमी कर रहे हैं तथा सैन्य व्यय में जो कमी कर रहे हैं।
ये सब निःशस्त्रीकरण ही है।

Sheena